Course -- M.A(Education),part - 2

Paper--- 11th, Educational  Administrative Practice

Prepared by -- Dr Meena Kumari

Topic--- Factors of Educational Administration

---

शैक्षिक प्रशासन के कारक

1 प्रस्तावना --किसी संगठन के कार्यशैली पे संगठन के बाहरी कारक तथा अंदर के कारकों का प्रभाव होता है। संगठन  का वातावरण, समय तथा परिस्तिथि पर निर्भर करता है। शैक्षिक प्रक्रिया भी  इसका अपवाद नहीं है । शैक्षिक  प्रशासन का संबंध भी देश विशेष के साथ-साथ वातावरण,समय तथा परिस्थिति पर भी निर्भर करता है। शिक्षा तथा इसके प्रशासन पर  सामाजिक, राजनीतिक आर्थिक ,संस्था तथा गतिविधियों का  प्रभाव रहता है! शैक्षिक प्रशासन के क्रियाकलाप जिन कारकों का प्रभाव पड़ता है वह निम्नवत है ----

2- सामाजिक कारक -सामाजिक उद्देश्य तथा कार्यों का प्रभाव समाज की उद्देश्य निर्माण तथा रीति रिवाजों से होता है ।इस प्रकार संगठन भी बदलते रहते हैं ।परिवेश तथा समाज के अनुसार,उदाहरणस्वरूप  आजादी के पूर्व या पश्चात भी बहुत ज्यादा प्राइवेट संगठनों का बोलबाला नहीं था परंतु आज भारत में एक से बढ़कर एक प्राइवेट शैक्षिक संस्थान है जो शिक्षा के क्षेत्र में अपना योगदान दे रहे हैं।अतः समाजिक परिवर्तन  का असर शैक्षिक प्रशासन  पर बहुत अधिक होता है। इनके अन्तर्गत  निमनलिखित कारक आते हैं --

१) शैक्षिक मूल्य -- समाज के मूल्य पर ही  शैक्षिक मूल्य निर्भर करता है। जैसे शैक्षिक मूल्य होंगे वैसे ही विद्यालय तथा विश्वविद्यालय एवं  समुदाय की अपेक्षा तथा आकांक्षा होगी। यदि समुदाय चाहता है कि  विश्वविद्यालय में उचित शिक्षा तथा अनुसंधान के लिए शैक्षिक कार्यक्रम बनाए जाए तो ,उसी प्रकार के शैक्षिक कार्यक्रम बनाए जाएंगे ।यदि समाज समझाता कि बच्चों में सामाजिक चेतना, राजनीतिक जागृति ,सांस्कृतिक  मूल्यों का विकास, प्रजातांत्रिक मूल्य विकसित हो तो समानता स्वतंत्रता ,सामाजिक कार्यक्रम बनाए जाएंगे और जो भी प्रशासन के हाथ में होगा वह इन बातों पर ध्यान देंगे।

२) नेतृत्व संरचना -- समाज तथा समुदाय कि आकांक्षाओं पूर्ति हेतु शैक्षिक  नेतृत्व की रचना बहुत महत्वपूर्ण होती है। समुदाय की प्रकृति के अनुसार नेतृत्व की प्रकृति का विकास होता है ।आर्थिक स्थिति या राजनीतिक शक्ति से निर्धारित नेतृत्व के अंतर्गत शैक्षिक प्रशासन तथा कार्यक्रम  होते हैं जैसे 34 साल बाद नई शिक्षा नीति का आना। जैसा नेतृत्व होता है उसी के अनुरूप शैक्षिक उद्देश्य तथा शैक्षिक कार्यक्रम तय किए जाते हैं तथा उसी अनरूप शैक्षिक प्रशासन की भूमिका बदलती रहती है।

३)भौतिक संसाधन -- समुदाय में उपलब्ध भौतिक  तथा मानवीय संसाधनों का प्रत्यक्ष प्रभाव शिक्षा तथा उसके प्रशासन से पड़ता है ।इनका उपयोग समुदाय कि आकांक्षाओं के अनुसार किया जाता है। शैक्षिक कार्यक्रम की गुणवत्ता पर स्थानीय संसाधनों का उपयोग तथा अनुपयोग  का सीधा प्रभाव पड़ता है।क्षेत्र के अनुसार शैक्षिक वातावरण पर मानवीय तथा भौतिक संसाधन प्रभाव डालते हैं तथा उसी अनुरूप शैक्षिक प्रशासन अपना कार्य करता है ।

४) व्यवस्था का स्तर --प्रत्येक शैक्षिक संगठनों का संचालन किसी संस्था या व्यवस्था के द्वारा किया जाता है ।इन संस्था का व्यवस्था के सदस्यों का  सामाजिक ,आर्थिक स्तर  प्रशासन के विभिन्न अंगों को प्रभावित करता है ।साधन संपन्न लोग शैक्षिक संगठन की प्रगति के लिए अनेकानेक कार्य करते हैं और अपने बच्चों को ऐसे विद्यालय या  विश्वविद्यालय में भेजते हैं जहां उनके सामाजिक आर्थिक स्तर का प्रभाव संगठन और प्रशासन पर पड़ता है।

५) सामुदायिक विशेषताएं -- व्यक्ति के मूल्य तथा विकास में समुदाय के चरित्र का विकास होता है ।सामुदायिक चरित्र शैक्षिक प्रशासन का निर्माण करती है ,जैसे कि पारिवारिक जीवन की गुणात्मकता ,समुदाय की प्रकृति, समुदाय का स्तर ,संस्थाएं और संगठन का इत्यादि।

६) पारिवारिक जीवन की  गुणात्मकता,--  शिक्षा तथा समाज की आधारभूत इकाई परिवार होता है। व्यवहार तथा व्यक्तित्व का पहला पाठ परिवार में ही बालक सीखता है। परिवार ही बालक की प्रथम पाठशाला है ।आंतरिक गुणों का विकास, भाषा का ज्ञान ,अभिव्यक्ति की शैलियां बच्चे परिवार में ही रहकर सीखते हैं ।समाजीकरण की प्रक्रिया में बच्चा, परिवार तथा परिवार के संबंधों से प्रभावित होता है। उसके बाद वह विद्यालय में आता है और फिर विश्वविद्यालय में। इस तरह से जितने भी शैक्षिक संगठन है ,वह परिवार का ही विस्तृत रूप है। समुदाय के गुणात्मकता  के अनुसार शैक्षिक प्रशासन, शैक्षिक कार्यक्रमों की रचना करते हैं। समस्याओं को हल करने में प्रशासक ,परिवार तथा समुदाय का सहयोग लेता है!

७) समुदाय की प्रकृति -- समुदाय की प्रकृति का निर्धारण राष्ट्रीय मूल्य,सांस्कृतिक मूल्य, प्रजाति आयु, जनसंख्या की प्रकृति ,जीवन की आकांक्षा ,सामाजिक परिवर्तन ,सामाजिक गतिशीलता ,आर्थिक स्तर ,जीवन स्तर ,उद्योग ,कृषि उत्पादन विभिन्न व्यवसाय,  यातायात साधन ,मनोरंजन आदि पर निर्भर करता है  इन कार्यों में पाई जाने वाली तथा होने वाले परिवर्तनों का प्रभाव शैक्षिक संगठन पर होता है ,जिससे शैक्षिक प्रशासन की भूमिका में भी बदलाव देखा जाता है।

८) संस्थाएं एवं संगठन किसी भी समुदाय की संस्थाओं संगठनों की संरचना के मुताबिक शैक्षिक कार्यक्रम की रचना की जाती है बार एसोसिएशन शिक्षक चेंबर ऑफ कॉमर्स संगठन श्रम संगठन राजनीतिक दल औद्योगिक तथा अन्य संस्थाओं का प्रभाव समुदाय पर पड़ता है यह प्रभाव पुनः शैक्षिक प्रशासन का कार्यक्रम में बदलाव लाता है समुदाय के विभिन्न लोक कल्याणकारी कार्यक्रमों को शैक्षिक संगठन में भी शामिल किया जाता है उदाहरण स्वरूप सभी विश्वविद्यालय द्वारा  कैंपस को हरा बनाने की मुहिम को अपनाया गया है  समय समय पर टीकाकरण मुहिम तथा रक्तदान शिविर जैसे कार्यक्रमों को भी शैक्षिक संगठनों द्वारा अपनाया गया है तथा समाज में जागरूकता अभियान चलाया जाता है।

९) शक्ति  संघर्ष --  समुदाय तथा समाज में विभिन्न प्रकार का संघर्ष देखा जाता है। इन संघर्षों का केंद्र बिंदु शक्ति होता है ।सामाजिक तनाव ,शक्ति के लिए संघर्ष, दल बंदी आदि से समुदाय प्रभावित और पीड़ित होता है ।ऐसी परिस्थिति में शैक्षिक संगठन तथा प्रशासन भी अलग  नहीं रह पाता है ।सहयोग, प्रयास संबंध में आसानी से युक्त समुदाय की आकांक्षाएं

भी ऊंची होती है यह अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए शैक्षिक प्रशासन को प्रभावी तरीके से उपयोग में लाते हैं तथा संघर्षशील समुदाय में भ्रम की स्थिति बनी रहती है।

१०) जीवन की जटिलता -- औद्योगिक और व्यापारिक भागों ने बना दिया है। जीवन को जटिल जीते हैं। कस्बे तथा गांव में दवाबहीनता के कारण जीवन सरल होता है ।आधुनिकता तथा बाजारवाद ने जीवन को अधिक जटिल और कठिन बना दिया जिसका प्रभाव शिक्षा पर पड़ना स्वाभाविक है, इससे शैक्षिक कार्यक्रम तथा शैक्षिक उद्देश्य भी प्रभावित होते हैं।इस परस्थिति में शैक्षिक प्रशासन का स्वरूप बदल जाता है।

११) राज्य की प्रकृति -- इससे संबंधित कार्यों में शैक्षिक प्रशासन को प्रभावित करने में राज्य की प्रकृति का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है शैक्षिक प्रशासन के प्रकृति के अनुसार शैक्षिक प्रशासन की संरचना तथा कार्यक्रम का निर्धारण होता है राज्य की प्रकृति में, सरकार की प्रकृति तथा सरकार के कार्य महत्वपूर्ण है । शैक्षिक संगठन को कितना आर्थिक प्रावधान है तथा उनके संवैधानिक प्रावधान क्या-क्या है इत्यादि भी शैक्षिक प्रशासन को प्रभावित करता है

१२) सरकार की प्रकृति एवं कार्य -- सरकार की प्रकृति जैसी होती है वैसा प्रशासन का स्वरूप होता है ।जैसे कि प्रजातांत्रिक सरकार में शक्ति का केंद्र बिंदु मतदाता है, तो ऐसी परिस्थिति में शैक्षिक प्रशासन पर राज्य की आशा के अनुरूप शैक्षिक प्रशासन कार्य करते हैं। प्रजातंत्र में सक्रिय लोकप्रिय ,बौद्धिक सभा के बिना कार्य नहीं चल पाता है ! अतः प्रजातांत्रिक सरकार तथा प्रशासन में व्यक्तिगत विभिन्नता तथा स्थानीय आवश्यकता हको ध्यान में रखा जाता है। प्रजातंत्र में शैक्षिक महत्त्व तथा दायित्व सरकार तथा स्थानीय समुदाय पर होता है ।शिक्षा ,संस्कृति के संरक्षण तथा प्रगति का सशक्त माध्यम है। सरकार इसके लिए कानून बनाती है, नियोजन ,मार्गदर्शन तथा निर्देशन करती है ।राज्य तथा स्थानीय समुदाय अपने लिए जो करते हैं उससे शैक्षिक प्रशासन भी प्रभावित होती हैं ।

१३) आर्थिक तथा संवैधानिक प्रावधान --- शिक्षा का बजट में,व्यय शिक्षा तथा कर्मचारियों की वेतन भुगतान,से व्यय लेखा जोखा , बजट ,शिक्षा में लागत , सरकार तथा व्यक्ति द्वारा इस व्यय की व्यवस्था ,शिक्षकों की गुणवत्ता को प्रभावित करता है।

राज्य के कानून ,नियम ,उप नियम आदि का शिक्षा पर नियंत्रण ,परीक्षण तथा संगठन का निर्धारण एवं शिक्षा और प्रशासन पर प्रभाव पड़ता है। यदि राज्य समस्त सुविधा देता है तो राज्य का नियंत्रण बढ़ जाता है ।दूसरी ओर राज्य केवल रूपरेखा प्रदान करता है और समाज पर छोड़ता है तो शैक्षिक प्रशासन का लचीलापन तथा उत्पादकता बढ़ जाती है।

इस तरह शैक्षिक प्रशासन पर विभिन्न कारकों के प्रभावों को देखा जा सकता है।